गोद लिए हुलसी फिर, तुलसी

अभुक्तमूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण बालक तुलसीदास को जन्म के बाद ही पिता द्वारा त्याग दिया गया। कहा जाता है कि उनकी माता की मृत्यु प्रसूतिकाल में ही हो गई थी। उनका पालन-पोषण मुनिया नामक दासी ने किया। बाद में बालक रामबोला (तुलसी का बचपन का नाम) बाबा नरहरिदास के पास आ गया जिन्होंने उसे शिक्षा-दीक्षा दी। इन्हीं गुरु से उन्हें रामकथा सुनने को मिली। बाबा नरहरिदास के साथ ही बालक रामबोला काशी में आया जहाँ परम विद्वान् महात्मा शेष सनातनजी की पाठशाला में 15 वर्ष तक अध्ययन करके वे शास्त्र पारंगत बने और अपनी जन्मभूमि राजापुर लौटे।

तुलसी का विवाह रत्नावली से हुआ था। कहा जाता है कि ये अपनी पत्नी पर इतने अनुरक्त थे कि एक बार उसके मायके चले जाने पर वे चढ़ी नदी को तैरकर पार करते हुए उसके पास जा पहुँचे और रत्नावली ने इन्हें धिक्कारते हुए कहा–

लाज न लागत आपकौं दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम कौं कहा कहौं मैं नाथ॥
अस्थि चर्ममय देह मम तामैं ऐसी प्रीति।
तैसी जौ श्रीराम महं होति न तौ भवभीति॥

रत्नावली के इन वचनों का ऐसा प्रभाव तुलसी पर पड़ा कि वे विरक्त होकर काशी चले गए। इस घटना का विवरण प्रियादास कृत भक्तमाल की टीका में तथा तुलसी चरित और गोसांई चरित में मिलता है।

कृतित्व–तुलसी की रचनाओं की संख्या आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बारह मानी है जिसमें पाँच बड़े और सात छोटे ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

बड़े ग्रन्थ हैं–(1) श्रीरामचरितमानस, (2) विनयपत्रिका, (3) कवित्त रामायण (कवितावली), (4) दोहावली, (5) गीतावली।

छोटे ग्रन्थ हैं–(1) रामलला नहछू, (2) कृष्णगीतावली, (3) वैराग्य संदीपनी, (4) रामाज्ञा प्रश्नावली, (5) बरवै रामायण, (6) पार्वती मंगल, (7) जानकी मंगल।

शिवसिंह सरोज में इनके अतिरिक्त 10 और ग्रन्थों के नाम दिए गए हैं जो तुलसी रचित बताए गए हैं, पर शुक्ल जी उन्हें तुलसी की प्रामाणिक रचनाओं में स्थान नहीं देते।

उनके कुछ ग्रन्थों की रचना के सम्बन्ध में जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं। यथा–

(1) **बरवै रामायण** की रचना गोस्वामी तुलसीदास ने अपने मित्र अब्दुर्रहीम खानखाना (रहीम) के आग्रह पर की थी। इसमें प्रयुक्त छन्द वही हैं जो रहीम के ग्रन्थ बरवै नायिका भेद में है।

(2) **कृष्ण गीतावली** की रचना वृन्दावन यात्रा के अवसर पर तुलसी ने की। गोसांई चरित में बेनीमाधवदास ने लिखा है कि कृष्ण गीतावली और रामगीतावली की रचना तुलसी ने चित्रकूट में उसके बाद की थी जब सूरदास जी उनसे मिलने चित्रकूट आये थे।

(3) **रामाज्ञा प्रश्न** की रचना तुलसी ने अपने मित्र प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित गंगाराम के अनुरोध पर की थी जो काशी में प्रह्लाद घाट पर रहते थे।

Scanned with CamScanner

(4) कहा जाता है कि हनुमान बाहुक की रचना तुलसी ने बाहु पीड़ा से मुक्ति पाने हेतु की थी। यह कवितावली में ही संकलित है तथा तुलसी की प्रामाणिक रचना है।

(5) **विनय पत्रिका** नामक अर्जी की रचना तुलसी ने 'कलिकाल' से मुक्ति पाने हेतु राम के दरबार में प्रस्तुत करने हेतु की।

तुलसीदास की कविता में लोकमंगल का तत्व विद्यमान है। उनकी दृष्टि अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक थी। वे सच्चे अर्थों में भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि थे। वैयक्तिक साधना का उपदेश देते हुए भी उन्होंने पारिवारिक और सामाजिक आदर्श का भी उपदेश दिया है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने तुलसी के महत्व का प्रतिपादन करते हुए कहा है—"तुलसीदास का महत्व जानने के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें कलिकाल का वाल्मीकि कहा था, स्मिथ ने उन्हें मुगल काल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना था, ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा था और यह तो बहुत लोगों ने बहुत बार कहा है कि उनकी श्रीरामचरितमानस भारत का बाइबिल है। इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और त्राता थे।"

तुलसी की भक्ति भावना

Scanned with CamScanner